

अभिकदतुव्यास प्रणीत

शिवराजविजय

(प्रथम निश्वास)

मूलांश-संस्कृतशब्दार्थ-वङ्गशब्दार्थ-वङ्गानुवाद-व्याकरण-
अलोकसंस्कृतव्याख्या-अध्यापनाव्याख्या समन्वित

सम्पादक

ड. विप्लव चक्रवर्ती

अध्यापक सरोजिनी नाइडू कलेज फर ओमेन, कोलकाता;

प्राक्तन अध्यापक कालना कलेज, वर्धमान;

अंशकालीन अध्यापक, पश्चिमवङ्ग राष्ट्रीय विश्वविद्यालय ।



उद्दालक पाबलिशिङ हाउस

कलकाता

অথ প্রথমো নিশ্বাসঃ

বিক্ষোৰ্মায়া ভগবতী যয়া সম্মোহিতং জগৎ ।

(ভাগবতম্-১০.১.২৫)

হিংস্রঃ স্বপাপেন বিহিংসিতঃ খলঃ সাধুঃ সমত্বেন ভয়াধিমুচ্যতে । (ভাগবতম্-১০.৭.৩১)

সংস্কৃত শব্দার্থ □ বিক্ষোঃ = শ্রীহরেঃ, মায়া = জগদ্বিমোহিনী শক্তিঃ, ভগবতী = অশেষগুণবতী বিদ্যাতে, যয়া = জগদ্বিমোহিন্যা শক্ত্যা, জগৎ = নিখিলং ভুবনং, সম্মোহিতম্ = বশীকৃতম্।

হিংস্রঃ = ক্রুরস্বভাবঃ, খলঃ = দুৰ্জনঃ, স্বপাপেন = স্বকীরেন পাতকেন, বিহিংসিতঃ = বিঘাতিতঃ জাতঃ, সাধুঃ = সজ্জনঃ, সমত্বেন = সমত্বভাবনয়া, ভয়াৎ = ভীতেঃ, মুচ্যতে = বিমুক্তোঃভবৎ।

বাংলা শব্দার্থ □ বিক্ষোঃ = শ্রীহরির, মায়া = জগদ্বিমোহিনী শক্তি, ভগবতী = অশেষগুণযুক্ত হয়ে অর্থাৎ সাফল্যের সঙ্গে বিরাজ করছে, যয়া = যে জগদ্বিমোহিনী শক্তির দ্বারা, জগৎ = নিখিল ভুবন, সম্মোহিতম্ = বশীভূত হয়ে আছে।

হিংস্রঃ = হিংস্রস্বভাবস্বভাব, খলঃ = দুৰ্জন, স্বপাপেন = নিজের পাপের দ্বারা, বিহিংসিতঃ = বিনাশপ্রাপ্ত হয়, সাধুঃ = সজ্জন, সমত্বেন = সমত্ব ভাবনার দ্বারা, ভয়াৎ = ভয় থেকে, মুচ্যতে = মুক্ত হয়।

বঙ্গানুবাদ □ শ্রীহরির জগদ্বিমোহিনী শক্তি অশেষগুণযুক্ত হয়ে অর্থাৎ সাফল্যের সঙ্গে বিরাজ করছে। সেই জগদ্বিমোহিনী শক্তির দ্বারা সমগ্র ভুবন বশীভূত হয়ে আছে।

হিংস্রস্বভাবযুক্ত দুৰ্জন নিজের পাপের দ্বারা বিনাশপ্রাপ্ত হয় এবং সজ্জন সমত্ব ভাবনার দ্বারা ভয় থেকে মুক্ত হয়।

ব্যাকরণ □ ● ব্যুৎপত্তিঃ বিহিংসিতঃ = বি-√হিংস্ + ক্ত প্রথমার একবচন। জগৎ = √গম্ + ক্ৰিপ্। ভগবতী = ভগ + মত্বপ্ + ঙীপ্। সম্মোহিতম্ = সম্ + √মুহ্ + ক্ত। বিমোচ্যতে = বি + √মুচ্ + কৰ্মবাচ্যে লট্ প্রথমপুরুষের একবচন।

●সকারণ বিভক্তিঃ বিক্ষোঃ = 'ষষ্ঠী শেষে' সূত্রানুসারে ষষ্ঠী হয়েছে। ভয়াৎ = বিমুচ্যতে এই বিরামার্থক ধাতুর প্রয়োগে 'জুগুপ্সাবিরামপ্রমাদার্থানামুপসংখ্যানম্' এই বার্তিকানুসারে ভয়পদটির অপাদানসংজ্ঞা হয় এবং 'অপাদানে পঞ্চমী' সূত্রানুসারে পঞ্চমী বিভক্তি হয়।

●সমাসঃ স্বং পাপং স্বপাপম্ (কৰ্মধারয়ঃ) তেন।

अनोका □ 'समाप्तिकामः मङ्गलमाचरेत्' इति शिष्टाचारानुमितश्रुतिः।
 ननु मङ्गलाचरणेन ग्रन्थसमाप्तिः भवति न वा विषयेऽस्ति विमतिः।
 केचन वदन्ति कादम्बर्या मङ्गले सत्यपि समाप्तिदर्शनात् नास्तिकानां
 ग्रन्थे च मङ्गलाभावेऽपि समाप्तिदर्शनात् न मङ्गलं
 ग्रन्थसमाप्तिकारणम्। मङ्गलाचरणस्य ग्रन्थसमाप्तिसमर्थकाः
 वदन्ति कादम्बरीकर्तुः विघ्नबाहुल्यात् न ग्रन्थसमाप्तिः। येषां च
 मङ्गलाभावेऽपि ग्रन्थसमाप्तिः तेषान्तु जन्मान्तरीयं पुण्यमेव
 कारणम्। वस्तुतः नव्यनैयायिकाः वदन्ति मङ्गलाचरणेन विघ्नध्वंसो
 जायते ततश्च विघ्नध्वंसात् ग्रन्थसमाप्तिरिति क्रमः।
 शिष्टाचारमाश्रित्य ग्रन्थकारः श्रीमान् अम्बिकादत्तव्यासः ग्रन्थादौ
 भागवतमहापुराणस्य वचनानि समुद्धरति। ग्रन्थकारः श्लोकद्वयस्य
 अंशविषेशमुद्धरति। तत्र सम्पूर्णतया श्लोकौ यथा-

विष्णोर्माया भगवती यया सम्मोहितं जगत्।

आदिष्टा प्रभुणांशेन कार्यार्थं सम्भविष्यति ॥ इति।

(भाग. १०/०१/२५)

अहो बतात्यद्भूतमेष रक्षसा बालो निवृत्तिं गमितोऽभ्यगात् पुनः।

हिंस्रः स्वपापेन विहिंसितः खलः समत्वेन भयाद्विमुच्यते ॥ इति।

(भाग. १०/०७/३१)

अध्यापना □ संस्कृत कविरा, शास्त्रकाररा ग्रन्थसमाप्तिकामनाय ग्रन्थे आदिते मङ्गलाचरण
 करतेन। ग्रन्थे आदिते मङ्गलाचरण अर्थात् श्लोकरचना, मङ्गलवाचक शब्देन सम्निवेश अथवा
 मङ्गलवाचक शास्त्रवचनेन उद्धृति एका शिष्टाचार। सेइ शिष्टाचारके मेनेइ ग्रन्थकार ग्रन्थे
 आदिते मङ्गलाचरण करेहेन। यदिओ मङ्गलाचरण ग्रन्थसमाप्तिर कारण कि ना से विषये अनेक
 वितर्क रयेहे। आवार मङ्गलाचरण ग्रन्थसमाप्तिर प्रति कारण नाकि विघ्नध्वंसेर प्रति कारण से
 विषयेओ दार्शनिकगणेर मध्ये अनेक मतविरोध रयेहे। याइ होक, मङ्गलाचरणे
 साधारणतः आशीर्वाद नमस्क्रिया ओ वस्तुनिर्देश थाके- 'आदौ नमस्क्रियाशीर्वा वस्तुनिर्देश एव
 वा'। ग्रन्थकार अम्बिकादत्तव्यास ग्रन्थे आदिते भागवत महापुराणेर दूटि श्लोकेर अंश